International Journal of Applied Research 2017; 3(8): 115-119

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(8): 115-119
www.allresearchjournal.com
Received: 15-06-2017
Accepted: 19-07-2017

Vandana Kumari
Research Scholar
B.R.A. University,
Department of History
Muzaffarpur, Bihar, India

Correspondence
Vandana Kumari
Research Scholar
B.R.A. University,
Department of History
Muzaffarpur, Bihar, India

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में गांधीजी की चंपारण यात्रा का अतुलनीय योगदान

Vandana Kumari

सारांश
इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य गांधीजी की चंपारण यात्रा के दौरान समूचे भारत में उपजे ब्रिटिश विरोधी जनाक्रोश अथवा गांधीजी की चंपारण यात्रा की उपलब्धियों का अध्ययन करना है। यह अध्ययन इस ऐतिहासिक परिपाटी की समीक्षा करता है कि चंपारण की यात्रा ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के भविष्य की रूपरेखा को तैयार करने में विभिन्न सत्याग्रह तथा आंदोलनों के जरिए लोगों में सामाजिक सरोकार का नव संचार कर दिया था। इस अध्ययन में चंपारण की यात्रा के अतुलनीय योगदान का आकलन करने की दृष्टि से चंपारण सत्याग्रह, चंपारण में बुनियादी विद्यालयों की स्थापना, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, खेड़ा सत्याग्रह तथा 1934 के भूकंप के विश्लेषण को आधार बनाया गया है।

कुटशब्द: चंपारण यात्रा, सत्याग्रह, खेड़ा सत्याग्रह, 1934 का भूकंप, असहयोग आंदोलन, महात्मा गांधी

प्रस्तावना
भारत की स्वतंत्रता संग्राम में चंपारण यात्रा का आजादी की लड़ाई के नए हथियार को मजबूती प्रदान करने में तथा महात्मा गांधी को देश के करीब लाने में अमूल्य योगदान रहा है इसी यात्रा ने परतंत्र भारत में अहिंसक आंदोलनों की नीव रखी तथा स्वतंत्रता के इस संग्राम को कांग्रेस के राजनीतिक क्षेत्र से निकालकर जन आंदोलन के स्वरूप में विकसित किया। भारत का पहला सत्याग्रह आंदोलन गांधीजी की चंपारण यात्रा के दौरान ही हुआ जिसकी सफलता ने आशा हीन तथा गुलामी से ग्रसित मानसिकताओं मैं नव ऊर्जा का संचार किया। दक्षिण अफ्रीका मैं किए गए सफल सत्याग्रह का प्रथम प्रयोग गांधी जी द्वारा चंपारण में किया गया जिसके पश्चात उनकी छवि एक राजनीतिक नेता के रूप में उभरी। चंपारण की सफलता ने स्वाधीनता संग्राम में नए आयामों का विकास किया तथा आंदोलनों की एक

लंबी श्रृंखला का निर्माण हुआ। शोषित तथा आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों ने चंपारण यात्रा के दौरान गांधी जी तथा उनके आंदोलनों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।

अध्ययन का उद्देश्य

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में ऐतिहासिक चंपारण की यात्रा से उपजे जनाक्रोश तथा ब्रिटिश विरोधी गतिविधियां के परिणामस्वरूप गांधीजी की इस यात्रा की उपलब्धियों का आकलन करना है। गांधी जी की चंपारण यात्रा के दौरान देश में आए परिवर्तन का विश्लेषण करना इस अध्ययन को आधार प्रदान करता है। इस अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषणात्मक विधि द्वारा अध्ययन कर प्रस्तुतीकरण किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र तथा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

अध्ययन क्षेत्र चंपारण बिहार के पश्चिमोत्तर में स्थित है यह क्षेत्र भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में सत्याग्रहों तथा आंदोलनों का गढ़ माना जाता रहा है । नेपाल की सीमा से सटा चंपारण क्षेत्र अपने गौरवशाली इतिहास के कारण स्वतंत्रता संग्राम की प्रमुख लड़ाइयों में अग्रणी रहा है। निलह कृषकों के शोषण के विरुद्ध सत्याग्रह से प्रारंभ हुई चंपारण की यात्रा ने बिहार तथा समूचे भारत के सामाजिक सरोकार को अत्यधिक प्रभावित किया।

चंपारण यात्रा की उपलब्धियां

1915 में भारत आने के पश्चात ही गांधी जी का भारतीय राजनीति में पदार्पण हुआ। गांधी जी का भारतीय राजनीति में एक प्रभावशाली नेता के रूप में उदय उनकी चंपारण यात्रा के दौरान ही हुआ । अतः चंपारण की यात्रा गांधी जी के राजनीतिक परिदृश्य में चंपारण सत्याग्रह के समानांतर आरंभ हुई तथा इसका अधिकार क्षेत्र असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, खेड़ा सत्याग्रह तथा भारत छोड़ो जैसे आंदोलनों तथा सत्याग्रह की सफलताओं तक विस्तृत होता गया। इन आंदोलनों की ताबड़तोड़ सफलताओं में गांधी की चंपारण यात्रा को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का सिरमौर बना दिया था। सरकार की अवैध नीतियों से शोषित प्रत्येक वर्ग में इस यात्रा की चर्चाएं होने लगी थी जिसका परिणाम स्वतंत्रता आंदोलनों में भारी जनसमर्थन के रूप में देखने को मिलता है। जगह जगह सरकारी नीतियों के विरुद्ध असहयोग तथा विरोध प्रदर्शन होने लगे थे। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने के साथ-साथ लोगों में अब स्वतंत्रता की चाह भी दिखने लगी थी। अतः चंपारण की यात्रा की सबसे बड़ी उपलब्धि लोगों की जागृत हो रही चेतना ही थी जिसने सरकार को झुकने पर मजबूर कर दिया था।[2]

चंपारण यात्रा का प्रारंभ: चंपारण सत्याग्रह

गांधीजी की पहली चंपारण यात्रा राजकुमार शुक्ल के अनुनय विनय के प्रयासों का परिणाम थी जिसने चंपारण जेसे सफल सत्याग्रह को जीवंत कर देने का कार्य किया । चंपारण का सत्याग्रह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की रीढ़ बनकर उभरा जिसने महात्मा गांधी को अपने वास्तविक उद्देश्य से अवगत कराया । कृषकों के आर्थिक शोषण के विरुद्ध राजकुमार शुक्ल के अनुनय विनय के परिणाम स्वरूप महात्मा गांधी 15 अप्रैल 1917 को चंपारण पहुंचे वहीं से चंपारण यात्रा का शुभारंभ हुआ।[1]

दक्षिण अफ्रीका से लौटे महात्मा गांधी ने सत्याग्रह का प्रथम प्रयोग चंपारण में ही किया। गांधी जी का सत्याग्रही रूपी यह प्रयोग निलह कृषकों पर अवैध रूप से लगाई गई तीन कठिया व्यवस्था के विरोध में था, गांधी जी के आगमन पर संपूर्ण

चंपारण के प्रत्येक वर्ग में नई ऊर्जा का संचार हुआ। इस सत्याग्रह की सफलता ने चंपारण यात्रा को और विशाल रूप देने का कार्य किया। गांधीजी एक विराट राजनीतिक छवि वाले नेता के रूप में उभरे जिनको समाज के प्रत्येक वर्ग का भरपूर समर्थन मिल रहा था । चंपारण के इस ऐतिहासिक संघर्ष में डॉ राजेंद्र प्रसाद, डॉ अनुग्रह नारायण सिंह, आचार्य कृपलानी, ब्रजकिशोर, महादेव देसाई, नरहरि पारीक समेत चंपारण के किसानों ने एम भूमिका निभाई। [2][3]

बुनियादी विद्यालयों की स्थापना

13 अप्रैल 1917 को चंपारण के अमोल्वा गांव से संत राउत, बृजकिशोर प्रसाद, अनुग्रह नारायण सिन्हा, रामनवमी प्रसाद तथा जेबी कृपलानी के समर्थन में गांधीजी ने पूर्वी चंपारण के ढाका जिला मुख्यालय में बरहरवा लखनसेन गांव में प्रथम बुनियादी विद्यालय को स्थापित किया। इसी क्रम में 30 सितंबर 1917 पश्चिमी चंपारण में एक बुनियादी विद्यालय तथा 17 जनवरी 1918 को मधुबन में द्वितीय बुनियादी विद्यालय को स्थापित किया गया। इन बुनियादी विद्यालयों की स्थापना का प्रमुख उद्देश्य निरक्षरता के विरुद्ध ग्रामीण लोगों के बीच जागरूकता पैदा करना था ।

असहयोग आंदोलन में चंपारण यात्रा का योगदान

चंपारण सत्याग्रह की सफलताओं ने बिहार तथा समस्त भारतीय राज्यों में एक राष्ट्रीय उत्साह को जागृत कर दिया था। महात्मा गांधी ने इस आंदोलन के माध्यम से असहयोग अहिंसा तथा शांतिपूर्ण प्रतिकार को अंग्रेजों के विरुद्ध शस्त्र के रूप में उपयोग किया यह आंदोलन अप्रैल 13 में घटित जलियांवाला बाग नरसंहार के 1919 बाद शुरू किया गया। [4] अहिंसा के माध्यम से भारत में ब्रिटिश हुकूमतों का विरोध करने के लक्ष्य से से प्रारंभ हुआ 1920 अगस्त 1 यह आंदोलन तक चला जिसमें चंपारण की 1922 जनता के साथ साथ भारत के अन्य राज्यों के लोगों ने भी सहयोग दिया। बिहार प्रदेश कांग्रेस के 12 वे प्रांतीय सम्मेलन के दौरान डॉ राजेंद्र प्रसाद की अध्यक्षता वाले इस सम्मेलन में यह निर्णय लिया गया कि गांधी जी द्वारा प्रारंभ किए गए असहयोग आंदोलन मैं देश की संपूर्ण जनता की भागीदारी रहेगी। इसी क्रम में लाला लाजपत राय की अध्यक्षता में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने असहयोग के प्रस्ताव को प्रचंड बहुमत से पारित किया जिसके फल स्वरुप देश के नागरिकों ने ब्रिटिश शासन प्रणाली वाले चुनावों, न्यायालयों, सरकारी स्कूल, विदेशी वस्त्रों तथा विदेशी शराब के बहिष्कार के निश्चय पूर्ण उद्देश्य में व्यापक रूप से भाग लिया जिसका परिणाम यह हुआ कि बिहार के साथ-साथ भारत के कई राज्य गांधी जी के इस राष्ट्रीय संघर्ष तथा आर्थिक राष्ट्रवाद के प्रयोग की प्रथम कर्मभूमि चंपारण में असहयोग आंदोलन का हिस्सा बनने लगे । 13 दिसंबर 1920 को मेहसी में बड़ी संख्या में हिंदू तथा मुसलमानों ने मिलकर असहयोग आंदोलन के समर्थन में स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग पर सभाएं की । अतः यह स्पष्ट कहा हा सकता है कि गांधीजी की चंपारण यात्रा का प्रभाव उनके असहयोग आंदोलन में सम्मिलित सभी लोगों पर पड़ा जिन्होंने असहयोग आंदोलन की सफलता हेतु विरोध प्रदर्शनों में भाग लिया।

1918 के खेड़ा सत्याग्रह पर चंपारण यात्रा का प्रभाव

चंपारण की ऐतिहासिक यात्रा का प्रभाव 1918 में खेड़ा गुजरात में हुए किसानों के सत्याग्रह पर भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। खेड़ा सत्याग्रह का नेतृत्व महात्मा गांधी जी के साथ सरदार वल्लभ भाई पटेल, महादेव देसाई, निहारी पारीक, शंकर लाल बैंकर, श्रीमति अनुसुइया बहन, इन्दुलाल

याज्ञिक और वल्लभ भाई के बड़े भाई विट्ठल भाई पटेल और अन्य नेताओं ने भी इस सत्याग्रह का नेतृत्व किया था गांधी जी के आग्रह पर सरदार वल्लभभाई पटेल अपनी वकालत को छोड़कर खेड़ा के किसानों के आर्थिक शोषण के विरुद्ध कार्यवाहीयों में जुट गए जिसमें खेड़ा के किसानों का जन समर्थन अत्यधिक संख्या में उन्हें मिला। खेड़ा का यह सत्याग्रह किसानों की फसल खराब हो जाने के बावजूद कर चुकाए जाने की अनिवार्य स्थिति के विरुद्ध आयोजित किया गया था।

अतः खेड़ा के कृषकों में असंतोष था। किसान अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहे। उन्हें अधिक दृढ़ बनाने के लिए महात्मा गांधी ने किसानों से कहा कि जो खेत बेजा कुर्क कर लिए गए हैं उसकी फसल काट कर ले आएँ। गांधी जी के इस आदेश का पालन करने मोहनलाल पंड्या तथा कुछ अन्य किसानों ने भी उनकी सहायता की। वे सभी पकड़े गए , मुकदमा चला और उन्हें सजा हुई।[5] इस प्रकार किसानों का यह सत्याग्रह समस्त भारत वासियों की दृष्टि में आ चुका था। खेड़ा में हुए इस जन आंदोलनकारी कृषक विद्रोह ने स्वतंत्रता संग्राम को और अधिक बल देने का कार्य किया जिससे लोगों में स्वतंत्रता की भावना प्रबल होने लगी।

चंपारण यात्रा का 1934 के भूकंप पर प्रभाव

चंपारण यात्रा के दौरान सामाजिक सरोकार का सबसे बड़ा उदाहरण वर्ष 1934 में आए भूकंप से प्रभावित क्षेत्रों में देखने को मिला। 15 जनवरी 1934 में आई भूकंप रूपी इस प्राकृतिक आपदा ने 30000 वर्ग मील क्षेत्र को अपनी चपेट में ले लिया था इस प्राकृतिक आपदा से हजारों लोगों की जान माल का नुकसान हुआ। The Bihar Central relief committee ने गांधी जी को इस आपदा से हुए नुकसान की जानकारी दी जिसके परिणाम स्वरूप 11 मार्च 1934 को गांधीजी पटना पहुंचे । गांधी जी के इस आगमन से स्वयंसेवको में एक नया परिवर्तन आया अब ये लोग इस बचाव कार्य में तन्मयता से जुट गए। इलाहाबाद भूकंप राहत समिति की सिफारिशों ने पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा उनके स्वयंसेवकों को भी चंपारण में हुई भारी तबाही के राहत एवं बचाव कार्य हेतु उत्साहित कर दिया था जिसके फलस्वरूप बिहार के बाहर से भी स्वयंसेवक चंपारण आने लगे तथा भूकंप पीड़ितों के राहत कार्य में जुट गए।

भारत छोड़ो आंदोलन पर चंपारण यात्रा का प्रभाव

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भारत छोड़ो आंदोलन का निर्णायक इतिहास रहा है । इस आंदोलन ने अंग्रेजी हुकूमतो की जड़ों को हिलाने का काम किया । महात्मा गांधी की चंपारण यात्रा के फल स्वरुप विभिन्न क्षेत्रों में विरोध प्रदर्शनों की श्रंखला निर्मित होने से भारत छोड़ो आंदोलन को पूरे भारत से व्यापक जनसमर्थन मिल रहा था। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की मशहूर घटना काकोरी हत्याकांड के 17 साल गुजर जाने के पश्चात 8 अगस्त, 1942 की देर शाम मुम्बई के ग्वालिया टैंक मैदान की बैठक में भारत छोड़ो आंदोलन प्रस्ताव पेश हुआ।

9 अगस्त 1942 को महात्मा गांधी के आह्वान पर प्रारंभ हुआ यह ऐतिहासिक आंदोलन दिन प्रतिदिन अपनी विराटता की दिशा में प्रगति करता गया । समूचे भारत में एक साथ कई स्थानों पर भारत छोड़ो आंदोलन को समर्थन मिल रहा था जिसके फलस्वरूप सरकारी तंत्र की दमन नीतियां नाकाफी साबित होने लगी थी। क्रिप्स मिशन की विफलताओं से उत्साहित महात्मा गांधी ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध अपनी कार्यवाहियों को और भी तेज कर दिया था। अंग्रेजों भारत छोड़ो जैसे नारों ने इस आंदोलन में ऐतिहासिक भूमिका का निर्वहन किया। परंतु थोड़े ही समय बाद महात्मा गांधी को गिरफ्तार कर लिया गया जिससे नाराज

हुए युवा संगठनों द्वारा देशभर में तोड़फोड़ तथा हड़तालों का आयोजन किया जाने लगा। लोगों ने सरकारी संपत्तियों पर हमला किया, रेलवे पटरियों को उखाड़ दिया, डाक व तार व्यवस्था को अस्त-व्यस्त कर दिया और वे सरकारी इमारतों पर तिरंगा फहराने लगे। बिहार के पटना में सचिवालय पर तिरंगा फहराने के दौरान सात युवा छात्र शहीद हो गए। इस प्रकार देखते ही देखते यह आंदोलन ब्रिटिश सरकार के लिए सबसे बड़ी चुनौती के रूप में उभरा । अतः यह आंदोलन स्वतंत्रता के अंतिम चरण को इंगित करता है। इसने गाँव से लेकर शहर तक ब्रिटिश सरकार को चुनौती दी जिससे भारतीय जनता के अंदर आत्मविश्वास बढ़ा और समानांतर सरकारों के गठन से जनता काफी उत्साहित हुई। इसमें महिलाओं ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया और जनता - ने नेतृत्व अपने हाथ में लिया।

निष्कर्ष

इस अध्ययन के सभी पहलुओं का विश्लेषण कर यह कहा जा सकता है कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में चंपारण यात्रा का योगदान अतुलनीय रहा है। जहां एक और अशिक्षा अथवा निरक्षरता के विरुद्ध संग्राम वहीं दूसरी ओर किसानो के आर्थिक शोषण के विरुद्ध किए गए स्वतंत्रता के प्रयासों मैं गांधीजी की चंपारण यात्रा ने अहम भूमिका निभाई है। इसके अलावा भूकंप से ग्रसित बिहार के सभी क्षेत्रों में राहत तथा बचाव कार्यों में जुटे स्वयं सेवकों पर भी गांधीजी तथा चंपारण यात्रा का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। अंग्रेजो भारत छोडो तथा करो या मरो जैसे नारो की सफलताओ के आधारों में भी चम्पारण भूमि पर किये गए ब्रिटिश विरोधी प्रदर्शनों की छाप स्पष्ट दिखाई देती है। अतः यह अध्ययन इतिहासकारो की इस विषय में समझ को आसान बनाता है जिसका मुख्य उद्देश्य चम्पारण के ऐतिहासिक महत्त्व को अंकित करना है।

संदर्भ सूची

1. राजेश कुमार भारतीय स्वतंत्रता में महात्मा गांधी जी का योगदान, International journal of the research education and scientific methods. 2015; 3(12):37-42
2. DG Tendulkar. Gandhi in Champaran, 1957.
3. Prasad R. Satyagraha in Champaran, 1928.
4. Rajshekhar Vyas. Meri Kahani Bhagat Singh: Indian Freedom Fighter. Neelkanth Prakashan, 33p.
5. एम.के. गांधी मेरी आत्मकथा, सत्य के साथ मेरे प्रयोग, 1929.